Dr. Akhlakh

जे० एस० मिल - स्वतंत्रता सम्बंधी विचार - Dr. Akhlakh Ahmed

D.R. college, Dauram

मिल ने अपनी पुस्तक 'On Liberty' में स्वतंत्रता सम्बंधी विचारों की विशद विवेचना की है। उसका मत है कि स्वतंत्रता के बिना व्यक्ति का आत्म विकास संभव नहीं है। उसका कहना है कि स्वतंत्रता द्वारा ही व्यक्ति के मस्तिष्क व आत्मा का विकास कर समाज का कल्याण किया जा सकता है। सामाजिक प्रगति व्यक्ति की मौलिक रचनात्मक प्रतिभा पर निर्भर करती है। व्यक्ति की रचनात्मक प्रतिभा एवं स्वतंत्रता के मार्ग में अनेक बाधाएं उपस्थित की जाती है। इस संदर्भ में मिल व्यक्तिगत क्षेत्र में राज्य के हस्तक्षेप, बहुसंख्यक दल की निरंकुशता और लोकमत को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए खतरनाक मानता है। मिल ने न केवल अपने राज्य एवं शासन के विरुद्ध अपितु लोकमत एवं परंपराओं के दबाव के विरुद्ध भी विचार, भाषण एवं कार्य की स्वतंत्रता का जोरदार समर्थन किया है। वस्तुतः मिल इससे भी ऊपर उठकर स्वतंत्रता की एक ऐसी धारणा का प्रतिपादन करता है जिससे व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास हो सके। मिल की स्वतंत्रता सम्बंधी विचार का अध्ययन मुख्यतः दो संदर्भो में किया जा सकता है— — विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता तथा कार्य की स्वतंत्रता

विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता -

मिल ने विचार एवं स्वतंत्रता के महत्व पर प्रकाश डाला है। विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता के पक्ष में वह अनेक तर्क देता है। सर्वप्रथम, सर्वसाधारण द्वारा अपनाया गया विचार ही सत्य नहीं होता है, किसी बात की सत्यता जनमत एवं परम्परागत मान्यता पर निर्भर नहीं करती है।

~~प्रसमपसत्रोंं~~ परम्पराओं एवं प्रथाओं के चलते गलत एवं भ्रांत विचारों को प्रायः अपना लिया जाता है। अतः प्रचलित अंधविश्वासों को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति को विचार एवं भाषण की स्वतंत्रता हो। तर्कों के द्वारा ही गलत विश्वासों को हटाया जा सकता है।

दूसरे, किसी व्यक्ति का विचार या तो सत्य होता है या मिथ्या अथवा कुछ सत्य और मिथ्या। यदि शासन व्यक्ति के सत्य विचार का दमन करता है तो वह सत्य के मार्ग में बाधाएं उपस्थित कर अन्याय करता है। यदि किसी व्यक्ति का विचार असत्य एवं हानिकारक भी हो तो भी उसका दमन नहीं होना चाहिए क्योंकि जनसमुदाय किसी विचार की असत्यता को समझ सकता है, उसकी निन्दा कर सकता है। यदि कोई विचार आंशिक रूप में ही सत्य है तो भी उसका दमन नहीं होना चाहिए, क्योंकि उसमें सत्य का कुछ अंश तो रहता ही है।

तीसरे, वाद-विवाद एवं विचार-विमर्श के द्वारा सत्य की खोज की जा सकती है। निषेधात्मक तथ्यों के साथ निरंतर संघर्ष से ही स्वीकारात्मक तथ्यों का अर्थ समझा जा सकता है। तर्क-वितर्क एवं वाद-विवाद द्वारा विचारों का स्पष्टीकरण होता है, विश्वास सुदृढ़ होता है, बुद्धि अनुप्राणित होती है एवं सत्य की झाँकी मिलती है।

चौथे, कोई भी व्यक्ति सत्य का ठेकेदार नहीं होता। कोई भी विचार न पूर्ण रूप से सत्य है न असत्य। सत्य सम्भवतः निष्कलीन होता है। वह बहुपक्षीय होता है। सत्य की प्राप्ति तभी संभव है, जब वाद-विवाद द्वारा सत्य के विभिन्न पक्षों को समन्वित किया जाए।

पाँचवें, भाषण एवं विचार की स्वतंत्रता से व्यक्ति की मानसिक प्रतिभा निखरती है। उसे यह भी अनुभूति होती है कि समाज में उसका महत्वपूर्ण स्थान है फलतः ~~आत्म~~ आनन्द - संतुष्टि की भावना तृप्त होती है।

छठें, भाषण एवं विचार की स्वतंत्रता से उच्च स्तर के नैतिक चरित्र का जन्म एवं विकास होता है।

अंत में, विचार - स्वतंत्रता मानव जाति की प्रगति की आवश्यकता भी है। किसी मान्य मत का विरोध करने, वादविवाद करने एवं नई विचारधारा को प्रतिपादित करने की स्वतंत्रता पाकर जनसाधारण अपनी मानसिक जागरूकता का विकास है।

कार्य की स्वतंत्रता -

मिल ने कार्य की स्वतंत्रता पर बल दिया है। उसके अनुसार विचार और भाषण की स्वतंत्रता तभी महत्वपूर्ण हो सकती है जब व्यक्ति को कार्य करने की स्वतंत्रता हो। मिल व्यक्तित्व के विकास को सामाजिक प्रगति का कारण मानता है। व्यक्तित्व का विकास तभी संभव है जब व्यक्ति को कार्य की स्वतंत्रता हो। कार्यों की स्वतंत्रता सामाजिक जीवन की प्रगति के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितनी व्यक्तिगत जीवन के विकास के लिए। मिल के अनुसार अपूर्ण मनुष्य जाति के लिए जिस प्रकार विचारों की स्वतंत्रता लाभदायक है, उसी प्रकार जब तक दूसरों को हानि

नहीं पहुँचती है तब तक विभिन्न व्यक्तियों को विभिन्न रूपों से कर्म करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए जिससे वे अपने चरित्र का विकास विभिन्न रूपों से कर सके।

पुनः मिल ने मनुष्य के सभी कर्मों को दो वर्गों में विभाजित किया है - आत्म-सम्बद्ध कार्य और अन्य-सम्बद्ध कर्म।

आत्म-सम्बद्ध कर्म वे हैं जिनका सम्बंध सिर्फ कर्ता से होता है। अन्य-सम्बद्ध कर्म का सम्बंध कर्ता के अतिरिक्त दूसरे व्यक्तियों से भी होता है। मिल जहाँ अन्य-सम्बद्ध कार्यों पर नियंत्रण का समर्थन करता है, वहीं आत्म-सम्बद्ध कार्यों को नियंत्रण से मुक्त रखना चाहता है। उसकी मान्यता है कि जब तक कोई व्यक्ति ऐसा कर्म करता है जिसका प्रभाव केवल उसी पर पड़ता है दूसरों पर नहीं, तब तक राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त कर्म की स्वतंत्रता से वैयक्तिक उत्साह, मौलिकता एवं नवीनता का आविर्भाव होता है। मिल का मत है कि व्यक्तियों का विकास विभिन्न रूपों से होता है, क्योंकि उनकी आंतरिक शक्तियों में विभिन्नताएँ होती हैं विभिन्न व्यक्तियों के विभिन्न आंतरिक क्षमताओं के विकास के लिए विभिन्न परिस्थितियों की आवश्यकता होती है।

अंत में, मिल ने यह भी कहा है कि कर्म की स्वतंत्रता के अभाव में मनुष्य की आंतरिक क्षमता का विकास अवरुद्ध हो जाता है, उसकी प्रतिभा मुरझा जाती है, उसके व्यक्तित्व का ह्रास हो जाता है। व्यक्ति के चारित्रिक ह्रास में सिर्फ राष्ट्र की प्रगति ही नहीं रुकती, उसका पतन भी प्रारंभ हो जाता है। अतएव, राष्ट्रीय प्रगति के उद्देश्य से भी मिल ~~की स्वतंत्रता~~ कर्म की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं — Dr. Akhlakh Ahmed, D.K. coll